दैनिक चैतन्य लोक इन्दौर 28 सितंबर 2019

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में 4था आर्यभट्ट मेमोरियल ओरेशन के अवसर पर व्याख्यान

वैज्ञानिकों के महान योगदान को रेखांकित किया

चैतन्य लोक » इन्दौर
dainikchaitanyalok.com

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय में 4वें आर्यभट्ट मेमोरियल विश्वविद्यालय के सभागार में शुक्रवार 27 सितंबर को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्म भूषण प्रो. पद्मनाभन बलराम, प्रख्यात भारतीय प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और भारतीय बायोकेमिस्ट और भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के पूर्व निदेशक थे। मुख्य अतिथि पद्म भूषण प्रो- पद्मनाभन बलराम का स्वागत विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी ने किया।

स्वागत भाषण में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने विज्ञान और भारतीय वैज्ञानिकों के महान योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने ओरेशन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा छात्रों का ध्यान आकर्षित करने और विद्वानों आर्यभट्ट के योगदान को जानने तथा उन्होंने आर्यभट्ट के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने अध्यायों के चार प्रभागों के बारे में भी बताया जैसे कि गीताकापद (13 छंद), गणितपद (33 छंद), कालक्रियापाद (25 श्लोक) और गोलपाद (50 छंद) और अंतरिक्ष में ग्रहों की स्थिति के बारे में उनके योगदान, सौर मंडल की प्रकृति और सूर्य और चंद्रमा के ग्रहण के कारण। गणितीय संदर्भ में आर्यभटीय में अंकगणित, बीजगणित, विमान त्रिकोणमिति और गोलाकार त्रिकोणमिति शामिल हैं और आधुनिक खगोल विज्ञान और गणित के लिए एक बहुत प्रभावशाली था। आयोजन के समन्वयक डॉ. उत्तम शर्मा ने पद्मनाभन बलराम साइटेशन पढ़ा, जिसमें जैव रसायन के क्षेत्र में उनके योगदान और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया। पद्म भूषण प्रो. पद्मनाभन बलराम द्वारा 4वें आर्यभट्ट मेमोरियल ओरेशन का विषय 'विज्ञान सार्वजनिक समझ की आवश्यकता है' पर, पद्मनाभन बालाराम ने कल्पना की क्षमता पर जोर दिया, लेकिन तथ्यों की नहीं बल्कि तथ्यों की समझ पर जोर दिया। उन्होंने संचार की भूमिका, विज्ञान और विज्ञान की सार्वजनिक समझ पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिकों के योगदान, और व्यक्तियों की सोचने की क्षमता, और विज्ञान करने के तरीकों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक तत्व की कमी और रीसाइक्लिंग को एक चुनौती के रूप बताया। उन्होंने विज्ञान चिकित्सा से जुड़े विवादास्पद तथ्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अंत में छात्रों द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब दिया। धन्यवाद के शब्द सचिव वैष्णव ट्रस्ट कमलनारायण भूरिया द्वारा दिया गया।

पत्रिका

Date: 28.09.2019

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय

'मानव हित में नए प्रयोग हैं तो सवालों से डरने की जरूरत नहीं'

विज्ञान में इनोवेशन पर आयोजित कार्यक्रम में बोले वरिष्ठ वैज्ञानिक पद्मनाभन बलराम

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ विज्ञान में विकास के लिए कल्पना पर जोर दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ हमें तथ्यों और उनकी समझ पर भी ध्यान देना चाहिए। जिस व्यक्ति में कल्पना शक्ति बेहतर है, वह निश्चित ही विज्ञान में इनोवेशन कर सकता है। यह कहना है पद्म भूषण से विभूषित प्रो. पद्मनाभन बलराम का। वे श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में स्टूडेंट्स को संबोधित कर रहे थे।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय बायोकेमिस्ट और भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूरु के पूर्व निदेशक पद्मनाभन ने अपने संबोधन के दौरान संचार की भूमिका, विज्ञान और विज्ञान की सार्वजनिक समझ पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिकों के योगदान, व्यक्तियों की सोचने की क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक तत्व की कमी और रिसाइकिलिंग को एक चुनौती के रूप में बताया। उन्होंने कहा, विज्ञान चिकित्सा से कई विवादास्पद मामले भी जुड़े हैं, लेकिन ऐसा हर क्षेत्र में होता है। विज्ञान एक ऐसा क्षेत्र हैं, जहां पर आप कुछ भी नया करेंगे तो लोग आपके ऊपर सवाल जरूर उठाएंगे। हमें बस इस बात का ध्यान रखना है कि जो भी प्रयोग कर रहे हैं वह मानवहित में होना चाहिए।

स्वागत भाषण में कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने विज्ञान और भारतीय वैज्ञानिकों के महान योगदान को बताया। उन्होंने आर्यभट्ट के योगदान के बारे में बताया और अध्यायों के चार प्रभागों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा, जैसे गीता का पद (13 छंद), गणित पद (33 छंद), काल क्रिया पाद (25 श्लोक) और गोलपाद (50 छंद) को बनाने का वैज्ञानिक कारण है। इसी तरह हमारे वेदों, धर्म और हजारों साल पुराने इतिहास में बताई अंतरिक्ष में ग्रहों की स्थिति, सौर मंडल की प्रकृति और सूर्य व चंद्रमा के ग्रहण के पीछे भी वैज्ञानिक कारण हैं। आर्यभट्ट के अंकगणित, बीजगणित, विमान त्रिकोणमिति और गोलाकार त्रिकोणमिति आधुनिक खगोल विज्ञान और गणित के लिए एक मजबूत स्तंभ हैं।